

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 10 अध्याय 7: तृणावर्त का उद्धार

14 September 2026



जब शिशु कृष्ण उनकी गोद में जँभाई लेते हैं, तब वात्सल्यमयी यशोदा उनके नन्हे मुख में समस्त सृष्टि को देखती हैं — आकाश, सागर, पर्वत और सारे प्राणी — और विस्मय से काँप उठती हैं।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम में पुनः आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पावन कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिपूर्ण यात्रा। पिछले अध्याय में राक्षसी पूतना शिशु भगवान् का वध करने गोकुल आई और उसके बदले उसे भगवान् से साधुजनों की गति प्राप्त हुई। यह सप्तम अध्याय श्रीकृष्ण की अद्भुत बाल-लीलाओं को आगे बढ़ाता है, और राजा परीक्षित, उन्हें सुनकर तृप्त न होते हुए, श्रीशुकदेव से और भी लीलाओं की याचना करते हैं। श्रीशुकदेव तीन अद्भुत घटनाएँ सुनाते हैं: कैसे दिव्य शिशु ने, माता के स्तन के लिए रोते हुए, अपने नन्हे चरण के स्पर्श मात्र से एक भारी छकड़े को उलट दिया; कैसे कंस के सेवक राक्षस तृणावर्त ने बवण्डर का रूप धरकर शिशु को आकाश में उड़ा लिया, किन्तु स्वयं निर्जीव होकर गिर पड़ा जबकि शिशु अक्षत लौट आया; और कैसे वात्सल्यमयी माता यशोदा ने अपने जँभाई लेते पुत्र के मुख में समस्त ब्रह्माण्ड को देखा। इन प्रत्येक लीला के द्वारा भगवान्, देखने वाली आँखों के लिए, चुपचाप यह प्रकट करते हैं कि व्रज का यह नन्हा गोप-बालक स्वयं परम पुरुष है।

अध्याय-पारेचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 10 (दशम स्कन्ध, पूर्वार्ध)
- अध्याय: 7 (सप्तम अध्याय)
- अध्याय-शीर्षक: तृणावर्त का उद्धार
- मुख्य वक्ता: श्रीशुकदेव गोस्वामी (राजा परीक्षित से कहते हुए); और आगे सूत गोस्वामी द्वारा नैमिषारण्य के ऋषियों से कहा गया
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित (शुकदेव की कथा के भीतर); नैमिषारण्य में एकत्र ऋषिगण
- मुख्य स्थल: ब्रज में गोकुल नामक गोप-ग्राम
- केन्द्रीय विषय: परीक्षित की कृष्ण की और लीलाएँ सुनने की उत्कण्ठा; छकड़े का उलटना; बवण्डर-राक्षस तृणावर्त का उद्धार; तथा शिशु के मुख में यशोदा का ब्रह्माण्ड-दर्शन
- मुख्य श्लोक-परिधि: स्कन्ध 10, अध्याय 7, श्लोक 1-37
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

पिछले अध्याय का सन्दर्भ

षष्ठ अध्याय में शिशु-घातिनी राक्षसी पूतना एक सुन्दर स्त्री के वेश में गोकुल आई और शिशु कृष्ण को अपना विषलिप्त स्तन दिया। भगवान् ने विष के साथ उसके प्राण भी खींच लिए, और क्योंकि उसने — दुष्ट भाव से ही सही — भगवान् को अपना स्तन दिया, उसे साधुजनों की गति प्राप्त हुई। मथुरा से लौटे नन्द उन सब घटनाओं पर विस्मित हुए और वसुदेव की चेतावनी को हृदय में सँजो लिया। यह अध्याय तब आरम्भ होता है जब मुग्ध राजा परीक्षित भगवान् की और भी बाल-लीलाएँ सुनने की याचना करते हैं।

परीक्षित की और लीलाएँ सुनने की उत्कण्ठा

राजा परीक्षित अपनी उत्कण्ठा को रोक नहीं पाते। वे कहते हैं कि सर्वशक्तिमान् भगवान् श्रीहरि अपने विभिन्न अवतारों में जो लीलाएँ करते हैं, वे कानों को मनोहर और मन को आनन्दप्रद हैं। वे श्रीशुकदेव से आगे की यह कथा सुनाने का विनम्र निवेदन करते हैं, यह जानते हुए कि ऐसी पावन वाणी श्रोता के भीतर गहरा परिवर्तन ले आती है।

श्रीराजोवाच

येन येनावतारेण भगवान् हरिरीश्वरः ।

करोति कर्णरम्याणि मनोज्ञानि च नः प्रभो ॥ १ ॥

यच्छृण्वतोऽपैत्यरतिर्वितृष्णा

सत्त्वं च शुद्ध्यत्यचिरेण पुंसः ।

भक्तिर्हरौ तत्पुरुषे च सख्यं

तदेव हारं वद मन्यसे चेत् ॥ २ ॥

*śrī-rājovāca yena yenāvatāreṇa bhagavān harir īśvaraḥ karoti karṇa-ramyāṇi mano-jñāni ca naḥ
prabho yac-chṛṇvato 'paity aratir vitṛṣṇā sattvaṁ ca śuddhyaty acireṇa puṁsaḥ bhaktir harau
tat-puruṣe ca sakhyaṁ tad eva hāraṁ vada manyase cet*

अर्थ: राजा ने कहा: सर्वशक्तिमान् भगवान् श्रीहरि जिस-जिस अवतार में जो लीलाएँ करते हैं, वे हमारे कानों को मनोहर और मन को प्रिय हैं, हे प्रभो। कृपया श्रीहरि की वही कथा सुनाइए जिसे सुनने से मनुष्य की उदासीनता और तृष्णा दूर हो जाती है, हृदय शीघ्र शुद्ध हो जाता है, भगवान् में भक्ति जागती है, और उनके भक्तों से मैत्री बनती है — यदि आप उचित समझें। (स्कन्ध 10, अध्याय 7, श्लोक 1-2)

वे श्रीशुकदेव से श्रीकृष्ण की और भी अद्भुत बाल-लीलाएँ सुनाने को कहते हैं, जिन्होंने मर्त्यलोक में अवतरित होकर मनुष्य-जाति की रीति का अनुकरण किया।

छकड़े का उलटना

श्रीशुकदेव आरम्भ करते हैं। शिशु के प्रथम करवट-उत्सव (उत्थान) के अवसर पर — जो प्रायः तीन मास के अन्त में मनाया जाता है, जब उनके जन्म का रोहिणी नक्षत्र उदित था — यशोदा ने एकत्र स्त्रियों के मध्य वाद्य, गीत और ब्राह्मणों द्वारा पावन मन्त्रों के पाठ के साथ अपने पुत्र को स्नान कराने का कृत्य किया। जब स्नान और आशीर्चन पूर्ण हुए और सम्मानित ब्राह्मण उपहारों से तृप्त कर दिए गए, तब निद्रालु शिशु को एक छकड़े के नीचे कोमलता से सुला दिया गया।

व्रज के अतिथियों के सत्कार में व्यस्त सुहृदय यशोदा ने अपने शिशु पुत्र का माता के दूध के लिए रोना नहीं सुना। स्तन की इच्छा से रोते हुए शिशु ने अपने नन्हे चरण ऊपर उछाल दिए।



माता के दूध के लिए रोते हुए शिशु कृष्ण अपने चरण उछालते हैं और ऊपर रखा भारी छकड़ा उलट जाता है, उसके पात्र चूर हो जाते हैं, समस्त व्रज विस्मित रह जाता है (श्लोक

4-10)।

औत्थानिकौत्सुक्यमना मनस्विनी
समागतान् पूजयती व्रजौकसः ।
नैवाशृणोद् वै रुदितं सुतस्य सा
रुदन् स्तनार्थी चरणवुदक्षिपत् ॥ ६ ॥

*autthānikautsukya-manā manasvinī samāgatān pūjayatī vrajaukasaḥ naivāśṛṇod vai ruditaṁ
sutasya sā rudan stanārthī caraṇāv udakṣipat*

अर्थ: पुत्र के प्रथम करवट-उत्सव में मन लगाए और एकत्र व्रजवासियों के सत्कार में व्यस्त मनस्विनी यशोदा ने अपने पुत्र का रोना नहीं सुना, जो स्तन के लिए रोते हुए अपने चरण ऊपर उछाल रहा था। (स्कन्ध 10, अध्याय 7, श्लोक 6)

नीचे लेटे शिशु के पत्ते-से कोमल नन्हे चरणों के आघात से वह छकड़ा पूरी तरह उलट गया। उस पर रखे दूध, दही और घी के धातु-पात्र चूर-चूर हो गए, उसके पहिए तथा धुरी उलट गए, और उसका जुआ टूट गया। यशोदा, नन्द तथा एकत्र स्त्रियाँ, इस अद्भुत दृश्य से चकित होकर, सोचने लगीं कि छकड़ा स्वयं कैसे उलट सकता है। वहाँ खेल रहे नन्हे बालकों ने गोपों से स्पष्ट कहा कि रोते हुए कृष्ण ने ही उसे अपने चरण से गिराया है — किन्तु बड़े-बूढ़े ऐसी बाल-बात पर विश्वास न कर सके, क्योंकि वे उस बालक के अपरिमेय बल को नहीं जानते थे।

आशीर्वचन तथा रक्षा के कृत्य

किसी दुष्ट आत्मा की उपस्थिति के भय से यशोदा ने रोते हुए पुत्र को उठा लिया और तभी दूध पिलाया जब ब्राह्मणों ने वैदिक मन्त्रों से रक्षा-कृत्य सम्पन्न कर दिया। ब्राह्मणों ने पावन अग्नि में आहुतियाँ दीं और पुनर्स्थापित छकड़े की दही, अखण्ड चावल, कुश तथा जल से पूजा की। शिशु को उठाकर, पावन मन्त्रों तथा पवित्र औषधियों से अभिमन्त्रित जल से उन्हें सींचकर, नन्द ने — इस विश्वास से कि द्वेष, असत्य और गर्व से रहित सत्यनिष्ठ जनों के आशीर्वाद कभी व्यर्थ नहीं जाते — श्रेष्ठ ब्राह्मणों को अत्यन्त हितकर भोजन कराया, और अपने पुत्र की सर्वांगीण समृद्धि के लिए वस्त्र, माला और स्वर्ण से सज्जित गौएँ दान में दीं। ब्राह्मणों ने बदले में अपने श्रेष्ठ आशीर्वाद दिए, क्योंकि पावन मन्त्रों में निपुण तथा भगवान् से युक्त जनों के आशीर्वाद कभी निष्फल नहीं होते।



नन्द ब्राह्मणों से रक्षा-कृत्य कराते हैं और पुत्र के कल्याण के लिए गौएँ तथा उपहार दान करते हैं, जिनसे उन्हें अमोघ आशीर्वाद प्राप्त होते हैं (श्लोक 11-17)।

बवण्डर-राक्षस तृणावर्त का आगमन

एक दिन, जब कृष्ण लगभग एक वर्ष के हो चले थे, यशोदा अपने पुत्र को गोद में दुलार रही थीं कि सहसा वे उनका भार सहन न कर सकीं, क्योंकि वे पर्वत-शिखर के समान भारी हो गए थे। चकित और भार से दबी हुई उन्होंने उन्हें भूमि पर बैठा दिया, मौन होकर परम पुरुष का स्मरण किया, और अपने गृह-कार्यों में लग गईं। उसी क्षण कंस का सेवक तृणावर्त नामक राक्षस, उसी के द्वारा भेजा गया, बवण्डर का रूप धरकर प्रकट हुआ।



कंस का सेवक राक्षस तृणावर्त बवण्डर का रूप धरकर बैठे शिशु को आकाश में उड़ा ले जाता है, गोकुल को धूलि और अन्धकार में ढँकते हुए (श्लोक 20-25)।

दैत्यो नाम्ना तृणावर्तः कंसभृत्यः प्रणोदितः ।
चक्रवातस्वरूपेण जहारासीनमर्भकम् ॥ २० ॥

daityo nāmnā tṛṇāvartaḥ kaṁsa-bhṛtyaḥ praṇoditaḥ cakravāta-svarūpeṇa jahārāsīnam arbhakam

अर्थ: कंस का सेवक और उसी के द्वारा प्रेरित तृणावर्त नामक दैत्य बवण्डर का रूप धरकर भूमि पर बैठे शिशु को उड़ा ले गया। (स्कन्ध 10, अध्याय 7, श्लोक 20)

समस्त गोकुल को धूलि के तूफान में ढँकते हुए, सबके नेत्रों को अन्धा करते हुए, और अपनी भयंकर गर्जना से दिशाओं को हिलाते हुए, वह राक्षस बैठे शिशु को ऊपर ले उड़ा। कुछ समय तक व्रज धूलि और अन्धकार में डूबा रहा, और यशोदा को अपना पुत्र वहाँ न मिला जहाँ उन्होंने उसे बैठाया था। उड़ती हुई बालू से घुटती और भ्रमित हुई कोई अपने आप को भी न देख सकती थी, दूसरे को तो क्या। पुत्र का कोई चिह्न न पाकर असहाय माता विलाप करने लगीं और उस गौ के समान भूमि पर गिर पड़ीं जिसका बछड़ा मर गया हो, और गोपियँ भी अश्रुपूरित मुख से रोने लगीं।

किन्तु आकाश में ऊँचे उठकर तृणावर्त और आगे न बढ़ सका, क्योंकि शिशु सहसा अकल्पनीय रूप से भारी हो गया था। उस भार को सहन करने या उस बालक को फेंक देने में असमर्थ, जो अचल पर्वत की भाँति उसके गले से लिपटा हुआ था, वह राक्षस गले से दबकर व्रज की सीमा पर निर्जीव गिर पड़ा, उसका सारा बल चुक गया। रोती हुई स्त्रियाँ एकत्र हुई और उन्होंने उस महान् राक्षस को एक शिला पर गिरा हुआ देखा — और, उनके आश्चर्य के बीच, शिशु कृष्ण को उसकी छाती पर सुरक्षित, पूर्णतः अक्षत पाया।

शिशु का माता को पुनः मिलना

विस्मित होकर गोपियों ने शिशु को राक्षस की छाती से उठाया और उसे उसकी माता को लौटा दिया।



बवण्डर-राक्षस निर्जीव गिर पड़ता है जबकि शिशु उससे सुरक्षित लिपटा रहता है; विस्मित गोपियँ अक्षत कृष्ण को उनकी माता को लौटा देती हैं (श्लोक 30)।

प्रादाय मात्रे प्रतिहृत्य विस्मिताः
कृष्णं च तस्योरसि लम्बमानम् ।
तं स्वस्तिमन्तं पुरुषादनीतं
विहायसा मृत्युमुखात् प्रमुक्तम् ।
गोप्यश्च गोपाः किल नन्दमुख्या
लब्ध्वा पुनः प्रापुरतीव मोदम् ॥ ३० ॥

*prādāya māt্রে pratihṛtya vismitāḥ kṛṣṇam ca tasyorasi lambamānam taṁ svastimantaṁ
puruṣāda-nītaṁ vihāyasā mṛtyu-mukhāt pramuktam gopyaś ca gopāḥ kila nanda-mukhyā
labdhvā punaḥ prāpur atīva modam*

अर्थ: विस्मित होकर गोपियों ने राक्षस की छाती से लिपटे शिशु कृष्ण को उठाया और उसे उसकी माता को लौटा दिया। आकाश-मार्ग से नरभक्षी द्वारा उड़ा ले जाए जाने पर भी मृत्यु के मुख से मुक्त, सकुशल लौटे शिशु को पाकर नन्द आदि गोप-गोपियाँ परम आनन्द से भर उठे। (स्कन्ध 10, अध्याय 7, श्लोक 30)

व्रज के भक्त-जन सोचने लगे कि उन्होंने कौन-से तप, भगवान् विष्णु की कौन-सी आराधना और कौन-से दान किए होंगे, जिनके फलस्वरूप उनका शिशु, जो मानो खो ही गया था, उन्हें लौट मिला और उनके प्राणों को पुनर्जीवित कर गया। और नन्द, गोकुल में एक के बाद एक अद्भुत घटनाएँ प्रकट होते देख, वसुदेव की भविष्यवाणी को बार-बार अपने हृदय में सँजोते रहे।

यशोदा का ब्रह्माण्ड-दर्शन

एक दिन, अपने पुत्र को उठाकर गोद में बैठाकर, वात्सल्य से अभिभूत भाग्यशालिनी यशोदा ने उन्हें अपना दूध से भरा स्तन पिलाया।

एकदार्भकमादाय स्वाङ्कमारोप्य भामिनी ।
प्रस्नुतं पाययामास स्तनं स्नेहपरिप्लुता ॥ ३४ ॥

*ekadārbhakam ādāya svāṅkam āropya bhāminī prasnutam pāyayām āsa stanaṁ sneha-
pariplutā*

अर्थ: एक दिन वात्सल्य से परिपूर्ण भाग्यशालिनी यशोदा ने अपने शिशु को गोद में लेकर उसे अपना दूध बहाता स्तन पिलाया। (स्कन्ध 10, अध्याय 7, श्लोक 34)

जब उन्होंने प्रायः दूध पी चुके शिशु के मुस्कराते मुख को दुलारा, तब नन्हे शिशु ने जँभाई ली — और उस मुख में यशोदा ने समस्त सृष्टि देखी: आकाश और क्षितिज, नक्षत्रों का समूह, चारों दिशाएँ, सूर्य और चन्द्र, अग्नि, वायु और सागर, पृथ्वी के विशाल खण्ड, पर्वत और नदियाँ, वन, और समस्त चराचर प्राणी। अपने शिशु के मुख में सहसा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को एक साथ प्रकट देखकर काँप उठी मृगनयनी माता ने अपने नेत्र मूँद

लिए और परम विस्मित होकर खड़ी रह गई। इस प्रकार सप्तम अध्याय “तृणावर्त का उद्धार” सबसे छोटे और सबसे प्रिय रूप में झलके इस अनन्तता के दर्शन पर समाप्त होता है।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. भगवान् की लीलाएँ श्रोता को पवित्र करती हैं। परीक्षित आरम्भ में ही कहते हैं कि ध्यानपूर्वक सुनी गई श्रीहरि की लीलाएँ उदासीनता और तृष्णा को घोलती, हृदय को शुद्ध करती और भक्ति को जगाती हैं (श्लोक 1-2)। कृष्ण की कथा सुनना स्वयं एक साधना है।
2. दिव्यता साधारण के भीतर छिपी रहती है। एक शिशु के चरण-प्रहार से उलटा छकड़ा, गोद में न सँभलने वाला भारी बालक — ब्रजवासी जो देखते हैं उस पर विश्वास नहीं कर पाते। भगवान् अपनी महिमा को शैशव की कोमलता में छिपाए रखते हैं, और उसे केवल प्रेममयी आँखों के सम्मुख प्रकट करते हैं।
3. संसार की कोई शक्ति भगवान् के आश्रितों का अहित नहीं कर सकती। तृणावर्त तूफान के समस्त वेग से शिशु को आकाश में उड़ा ले जाता है, फिर भी स्वयं मरकर गिरता है जबकि शिशु अक्षत लौट आता है (श्लोक 20, श्लोक 30)। जो भगवान् को सौंप दिया जाता है, वह मृत्यु की पहुँच से परे है।
4. कृपा के प्रति उचित प्रतिक्रिया भक्ति और कृतज्ञता है। गोप प्रत्येक उद्धार पर गर्व नहीं, अपितु आशीर्वचन के कृत्यों, ब्राह्मणों को दान और अपने सौभाग्य पर हार्दिक विस्मय से प्रतिक्रिया करते हैं (श्लोक 11-17, श्लोक 32)।
5. अनन्त, अन्तरंग के भीतर वास करता है। यशोदा के दर्शन में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड उस शिशु के मुख में दिखता है जिसे वे गोद में लिए हैं (श्लोक 34-37)। परम तत्त्व दूर और अमूर्त नहीं है; वह हमारे प्रेम के पात्र के जितना ही निकट है।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

यह अध्याय एक ही कोमल विरोधाभास पर टिका है: जिस शिशु को माता के दूध की आवश्यकता है, वही अपने मुख में ब्रह्माण्ड धारण किए है। यशोदा कृष्ण से इसलिए प्रेम नहीं करती कि वे जानती हैं कि वे भगवान् हैं; वे उन्हें अपने ही नन्हे पुत्र के रूप में प्रेम करती हैं — और ठीक उसी प्रेम में अनन्तता का दर्शन दिया जाता है। भागवत मानो यह फुसफुसाता है कि सर्वोच्च सत्य पर्वत पर बैठे दार्शनिक के लिए सुरक्षित नहीं है, अपितु वह स्नेह के सबसे साधारण बन्धनों के भीतर, कोमल हृदयों के सम्मुख प्रकट होता है। राक्षस विष और बवण्डर लिए आते हैं और उन्हें छू तक नहीं पाते; माता केवल प्रेम लिए आती है, और उसी को सम्पूर्ण सृष्टि दिखाई जाती है। हमें आमन्त्रण है कि हम भगवान् के पास किसी हल की जाने वाली समस्या के रूप में नहीं, अपितु प्रेम किए जाने वाले प्रियजन के रूप में जाएँ — और विश्वास रखें कि उस प्रेममयी निकटता में, समय आने पर, जो कुछ हमें सचमुच चाहिए, वह प्रकट हो जाएगा।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज अपने भगवत्-स्मरण को माता के प्रेम जितना अन्तरंग बनाएँ। कोई एक छोटा, साधारण क्षण चुनें — किसी शिशु को गोद में लेना, भोजन बाँटना, आकाश को निहारना — और उसे चुपचाप कृष्ण को अर्पित करें, उसके भीतर छिपी उनकी उपस्थिति को देखते हुए, जैसे यशोदा ने अपने पुत्र में ब्रह्माण्ड देखा। ऐसा करते हुए कोमलता से जपें: “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।”

उपसंहार

दशम स्कन्ध का सप्तम अध्याय तीन अद्भुत घटनाओं को एक ही माला में पिरोता है: उलटा छकड़ा, बवण्डर-राक्षस तृणावर्त का पतन, और शिशु के मुख में ब्रह्माण्ड का दर्शन। इन प्रत्येक में, ब्रज के लाडले के रूप में अवतरित परम भगवान् अपनी छिपी महिमा को शैशव के आवरण में से झलकने देते हैं — एक राक्षस के आक्रमण को उतनी ही सहजता से मिटाते हुए जितनी सहजता से एक शिशु छकड़े को गिराता है, और एक प्रेममयी माता की आँखों के सम्मुख सम्पूर्ण सृष्टि को अनावृत करते हुए। इस नाटकीयता के नीचे भागवत का निरन्तर आश्वासन बहता है: कि भगवान् अपने आश्रितों की प्रत्येक संकट से रक्षा करते हैं, और स्वयं को शक्ति या चातुर्य के सम्मुख नहीं, अपितु सरल, अनन्य प्रेम के सम्मुख सर्वाधिक पूर्णता से प्रकट करते हैं। इन लीलाओं को सुनकर हम भी अपने हृदय में यशोदा के लाल को धारण करें, और उस निकटता में शुद्ध भक्ति का आरम्भ पाएँ।

श्रीमद्भागवतम् की दिव्य ज्ञान-ज्योति हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जगाए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ तथा आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (सम्पूर्ण), दशम स्कन्ध (पूर्वार्ध), सप्तम प्रवचन।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज्ञम · बिस्वा सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन तथा अनुशंसा के अनुसरण में प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, निष्ठापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण में दिखाए गए हैं और उनके अर्थ सारांश-रूप में दिए गए हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद अथवा टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी भी प्रकाशक द्वारा संबद्धता अथवा समर्थन का कोई भाव अभिप्रेत नहीं है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-10-chapter-7-deliverance-of-trinavarta-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम · कल्कि अवतार इंटरनेशनल · बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट